Dev Ganesha
ज्ञान के समुद्र महामुनि पराशर
को कोटि कोटि नमन्
रुद्राक्ष धारे, सब अङ्गों में विभूति लगाए,
भस्म का त्रिपुण्ड्र मस्तक में दिये, जटाधारे,
श्वेत यग्योपवीत पहिने, वल्कल वस्त्र (वृक्ष छाल)
ओढ़े महामुनि पराशर
- स्कन्दपुराण, ब्रह्म खण्ड (१२)

ॐ पराशरं वेदनिधिं नमस्ये।

ब्रह्मर्षि पराशर

"शक्तेः पराशरः श्रीमान् सर्वज्ञस्तपतां वरः।"

@मेरुशृङ्ग

पराशरेश्वरः कूपो हृषीकेशस्य दक्षिणे।
पराशराख्यो ब्रह्मर्षिः सिद्धिमत्रैव लब्धवान् ॥२६॥

अर्थात - हृषीकेश कूप से दक्षिण में 'पराशर कूप' है,
यहाँ पराशर 'ब्रह्मर्षि' सिद्ध हुए थे।

- स्कन्द पुराण, सम्भल-माहात्म्य, अध्याय-२७

ब्रह्मवंशी शिरोमणि श्री ब्रह्मर्षि पराशर
ददाति स्नानमत्रेण प्रार्थिभ्यो वाँछित फलम्।
भुक्ति-मुक्ति प्रदानृणां महर्षेस्तस्य तेजसा ॥६॥
अर्थात - वह वेतवा नदी केवल स्नान करने से ही याचकों को मन चाहा फल देती है और वह उन महर्षि (पराशर) के तेज से भोग तथा मुक्ति को देने वाली है।

श्रीमन्नारायण
@मेरुशृंग
मुनीन्द्रं रामनिष्ठं च जटोर्ध्वपुण्डधारकम्।
वन्दे पराशराचार्यं शक्तिपुत्रं जगद्गुरुम् ॥६ ॥
अर्थात - जो मुनियों में श्रेष्ठ हैं, जो भगवान श्रीराम में निष्ठा रखने वाले हैं, जो सिर पर जटा और मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र को धारण करने वाले हैं - उन मुनि शक्ति के पुत्र एवं जगद्गुरु आचार्य पराशर को मैं वन्दन करता हूँ।
रामभक्त श्री मुनिश्रेष्ठ पराशर
पराशरसर

"शक्तेः पराशरः श्रीमान् सर्वज्ञस्तपतां वरः।"
-"कूर्म पुराण"
अर्थात - पराशर मुनि "श्री" (ऐश्वर्य, आचरण एवम कीर्ति)
से युक्त, सर्वज्ञ एवम तपस्वियों में श्रेष्ठ हैं।

■ श्री पराशर वन्दना - दशश्लोकि स्तुति

॥ 'पराशरं नौमि गुरुं मुनीनाम्'॥

(गुरु-स्वरूप मुनि पराशर को नमस्कार है।)

बृहस्पते ! नमस्तुभ्यं नारदाय महात्मने।

पराशराय गार्ग्याय गौतमाय यमाय च॥

शातातपाय शाङ्ख्याय संवर्ताय नमो नमः।

चतुर्विंशतिसंख्येभ्यो मुनिभ्योस्तु नमो नमः ॥१॥

#अर्थात - बृहस्पति, नारद, #पराशर, गर्ग, गौतम, यमदेव, शातातप, शङ्ख, तथा संवर्त - (इन सभी) महात्माओं को (मेरा) नमस्कार है। ये मुनि संख्या में चौबीस हैं - इन सबको नमस्कार है।

परेषु पापचित्तेषु नादत्ते कोपलक्षणम्।

शरं यस्मात् ततः प्रोक्तः ऋषिरेव पराशरः ॥२॥

#अर्थात - दूसरों के प्रति मन में पापी विचारों (ईर्ष्या, घृणा, द्वेष एवं प्रतिहिंसा) को (जिसने कभी) स्वीकार नहीं किया तथा क्रोध (मान, माया, लोभ एवं अहंकार) आदि (अशुभ लक्षणों) का जिसने त्याग कर दिया। जिसने (वध करने वाले राक्षसों के) शरों को दूर कर दिया, अतः ऋषियों ने (उन्हें) #पराशर ही कहा।

मुनिः श्रीमान् शक्तिपुत्रः पराशरः।

सर्ववेदान्तरत्नानामाकरः करुणानिधिः॥३॥

स्वस्वरूपमहानन्दप्रकाशपरमाम्बुधौ।

निमग्नो निश्चलस्तुष्णोमास्ते केवलमास्तिक॥४॥

#अर्थात - शक्ति के पुत्र #मुनि_पराशर '#श्रीसम्पन्न', सभी वेदान्तों के रत्नाकर, तथा दूसरों पर दया करने वाले (करुणानिधान) हैं। सुन्दर रूप को धारण करने वाले, महानन्द (परम् आनन्द प्रदान करने वाले), प्रकाश के समान देदीप्यमान, (सुखरूपी) परम सागर में निमग्न, निश्चल, (ज्ञान-विज्ञान से) तृप्त तथा ईश्वर के ही अस्तित्व को मानने वाले हैं। ॥३-४॥

अंशैः षङ्भिः समाकीर्णं अङ्गैर्वेदमिवापरम्।

पुराणं वैष्णवं चक्रे यस्तं वन्दे पराशरम् ॥५॥

#अर्थात - मैं उन निर्मल (-चरित्र को धारण करने वाले) #मुनि_पराशर को वन्दन करता हूँ, जिन्होंने छहों वेदाङ्गों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरूक्त) - से युक्त परम् वैष्णव पुराण की रचना की है।

वसिष्ठं ब्रह्मविच्छ्रेष्ठं शक्तिं योगविदां परम्।

पराशरं पुराणज्ञं प्रणतोऽस्मि मुनित्रयम् ॥६॥

#अर्थात - ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ वसिष्ठ, योगवेताओं में श्रेष्ठ शक्ति तथा पुराणज्ञ (पुराणों को जानने वालों में श्रेष्ठ) #पराशर - इन तीन मुनियों को मैं प्रणाम करता हूँ।

वसिष्ठ मुनि शार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलं ।

अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम् ॥७॥

भरद्वाजं च माण्डव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम् ।

अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेदशास्त्रविचक्षणाः।

तान् सर्वान् प्रणिपत्याहं शुभं कर्म समारभे ॥८॥

#अर्थात - वसिष्ठ, मुनि शार्दूल, विश्वामित्र, गोभिल, अगस्त्य, पुलस्त्य, दक्ष-मित्र, #पराशर, भरद्वाज, माण्डव्य, याज्ञवल्क्य, गालव तथा अन्य तपस्या में प्रवृत्त एवं वेद-शास्त्र के अर्थ तत्व को जानने वाले विप्रगण - इन सब मुनियों को प्रणाम करके मैं शुभ कर्म का आरम्भ करता हूँ।

वृहस्पतिं च च्यवन मार्कण्डेयं च लोमशम् ।

वाल्मीकि परशुरामं च संवर्तं च विभाण्डकम् ॥९॥

देवलं च वामदेवमृष्यशृङ्ग पराशरम्।

एतान् सर्वान् नमस्कृत्य तस्थौ स पुरतो विधेः ॥१०॥

#अर्थात -वृहस्पति, च्यवन, मार्कण्डेय, लोमश, वाल्मीकि, परशुराम, संवर्त, विभाण्डक, देवल, वामदेव, ऋषयशृङ्ग तथा #पराशर - इन सब मुनियों को विधिपूर्वक आगे स्थित (खड़े) होकर नमस्कार करता हूँ।